IJESRR

E-ISSN 2348-6457
P-ISSN 2349-1817
editor@ijesrr.org

02/13

शिक्षण में सक्रिय अधिगम प्रविधि (एएलएम) का अध्ययन

समता वर्मा
शोधार्थी

डॉ. बी.आर. बरोदे
शोध निर्देषक

सार

प्रस्तुत शोध पत्र में कक्षा शिक्षण को प्रभावशाली बनाने में सक्रिय अधिगम विधि कि प्रभावशीलता पर शोध किया गया है। अध्यापन में पाया गया कि सक्रिय अधिगम प्रविधि एवं परंपरागत विधि की तुलना में अधिक प्रविधियों का प्रयोग किया गया तथा सक्रिय अधिगम विधि परंपरागत विधि कि तुलना में अधिक प्रभावी रही है। जब वे पाठ्यक्रम सामग्री के साथ जुड़ते हैं और सक्रिय रूप से अपने सीखने में भाग लेते हैं। फिर भी पारंपरिक शिक्षण मॉडल ने छात्रों को निष्क्रिय रिसेप्टर्स के रूप में स्थान दिया है जिसमें शिक्षक अवधारणाओं और सूचनाओं को जमा करते हैं। मॉडल ने पाठ्यक्रम सामग्री के वितरण पर जोर दिया है और मूल्यांकन में पाठ्यक्रम सामग्री को प्रतिविंवित करने में निपुण छात्रों को पुरस्कृत किया है।

मुख्य शब्द: शिक्षण, शिक्षक, सक्रिय अधिगम प्रविधि.

परिचय

सक्रिय शिक्षण पद्धति भी गतिविधि आधारित शिक्षण का एक रूप है। यह सभी शिक्षार्थियों को सीखने में भाग लेने के लिए बनाता है। इस पद्धति में छात्र पढ़ने, लिखने, बोलने, चित्र बनाने, साझा करने, कौशल को व्यक्त करने और व्यक्तिगत रूप से और समूहों में प्रश्न करने में शामिल होते हैं। सक्रिय सीखने में छात्रों को चीजों को करने और वे जो कर रहे हैं उसके बारे में सोचने में शामिल होते हैं। बोनवेल और ईसन के अनुसार छात्रों को सिर्फ सुनने से ज्यादा कुछ करना चाहिए। उन्हें पढ़ना, लिखना, चर्चा करना और समस्याओं को हल करना चाहिए। उन्हें उच्च–क्रम के सोच कार्यों में संलग्न होना चाहिए। कार्य विश्लेषण, संश्लेषण और मूल्यांकन हैं। छात्रों को पारंपरिक व्याख्यान पद्धति की तुलना में सक्रिय सीखने को बढ़ावा देने वाली रणनीतियाँ पसंद हैं। सक्रिय सीखने में, छात्र कुछ ऐसा कर रहे हैं जिसमें जानकारी की खोज, प्रसंस्करण और आवेदन करना शामिल है। सीखने की प्रक्रिया में छात्रों को सक्रिय रूप से शामिल करने के लिए कई शिक्षण रणनीतियों को नियोजित किया जा सकता है। एएलएम में गतिविधियां महत्वपूर्ण सोच में कौशल में सुधार करती हैं, प्रेरणा और प्रतिधारण और पारस्परिक कौशल में वृद्धि करती हैं। सक्रिय शिक्षण में छात्र सीधे और सक्रिय रूप से सीखने की प्रक्रिया में शामिल होते हैं। केवल मौखिक और दृश्य रूप से जानकारी प्राप्त करने के बजाय, छात्र प्राप्त कर रहे हैं और भाग ले रहे हैं और कर रहे हैं। सक्रिय सीखने के तरीकों की आवश्यकता है कि छात्र को सार्थक वात करने, सुनने, लिखने और पढ़ने के अवसर खोजने चाहिए।

सक्रिय अधिगम प्रविधि

सामाजिक परिवर्तन में नैतिक मूल्यों की आवश्यकता का अध्ययन(किशोर विद्यार्थियों के विशेष संदर्भ में)

धनंजय मजूमदार,शोधार्थी, (शिक्षाशास्त्र)
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय,जयपुर,राजस्थान

प्रस्तावना

पांच वर्ष की आयु तक के एक वच्चे को, अमोरल माना जाना चाहिए, उस समय तक, उसे नैतिकता की कोई अवधारणा नहीं है। अंतरात्मा क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं की एक लंबी श्रृंखला का परिणाम है जो किसी के स्वयं के अनुभवों की प्रतिक्रिया है। किशोरावस्था के दौरान, सुपरएगो या विवेक एक प्रभावी सेंसर के रूप में काम करना शुरू कर देता है।

किशोर सोचने लगता है कि कुछ व्यवहार नैतिक रूप से उचित है या नहीं। लेकिन इस संबंध में परिपक्वता की कमी के कारण, कई बार, वह या वह भ्रमित हो जाता है, और यह तय करने में विफल रहता है कि एक निश्चित चीज की जानी चाहिए या नहीं। मार्गदर्शन के लिए, ऐसे कठिन अवसरों के दौरान, किशोरों को संदर्भ के लिए अच्छी मात्रा में प्रदर्शनों की सूची की आवश्यकता होती है।

नैतिक शब्द लैटिन शब्द से बना है जिसका अर्थ है शिष्टाचार, रीति–रिवाज और लोक तरीके। नैतिकता सामाजिक व्यवस्था के साथ अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ी हुई है। बच्चे को सीखना है कि क्या अच्छा है और क्या बुरा है, क्या सही है और क्या गलत है। उसे अपना कर्तव्य भी सीखना होगा।

नैतिक विकास के आयाम –

नैतिक विकास वह प्रक्रिया है जिसमें बच्चा अपने समुदाय द्वारा दिए गए मूल्यों को प्राप्त करता है। इन मूल्यों के संदर्भ में सही और गलत की भावना प्राप्त करता है३। अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं और मजबूरियों को नियंत्रित करने के लिए सीखता है ताकि, जब एक स्थितिजन्य संघर्ष (उठता है, तो वह वही करता है जो उसे करना चाहिए बजाय इसके कि उसे क्या करना है)। नैतिक विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक समुदाय परिपक्व वयस्क के सामाजिक व्यवहार में शिशु की अहंता को स्थानांतरित करना चाहता है।

सामाजिक सरोकार और महिला सशक्तिकरण

सचिन कुमार पेन्डके,शोधार्थी (शिक्षाशास्त्र)

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय,जयपुर,राजस्थान

अध्ययन परिचय

सृष्टि के प्रारम्भ में मानव का जीवन कैसा था? स्त्री–पुरूष के सम्बन्ध उनकी भूमिकाएं क्या थीं? जिससे स्पष्ट हुआ कि प्राचीन काल से अब तक इतिहास के भिन्न–भिन्न कालखण्डों में महिलाओं की दशा भी बदलती रही है। महिला सशक्तिकरण के इस मॉडयूल में आइये! मानव के उद्‌भव एवं विकास के ऐतिहासिक क्रम में हम गहराई से महिलाओं की स्थिति को जानने का प्रयत्न करते हैं। महिलाओं को केन्द्र में रखकर इतिहास को निम्नांकित कालखण्डों में बांटा जा सकता है –

आदिकाल : आदिमानवों का समाज झुण्ड में रहता था। इस झुण्ड में कुछ स्त्री पुरुष तथा बच्चे होते थे। वे फल–फूल तथा शिकार कर अपना जीवन व्यतीत करते थे। बारिश तथा धूप से बचने के लिए गुफाओं में रहते थे। स्त्री–पुरूष संबंध स्वच्छंद थे। धीरे–धीरे इस व्यवस्था ने उस समय की जरूरत के हिसाब से आकार ग्रहण करना शुरु कर दिया। गर्भवती तथा प्रसूता स्त्रियाँ शिकार तथा भोजन एकत्र करने की अन्य गतिविधियों में पहले की तरह हिस्सा नहीं ले पाती थीं। शिशु के प्रति एक स्वाभाविक लगाव, उसकी देख–रेख आदि समस्या के समाधान स्वरूप स्त्रियाँ घर पर रहने लगीं। गृह प्रबंधन पूरी तरह स्त्रियों के हाथ में था। पुरुष सैनिक की भांति अपने घर की रक्षा करते थे। आदिमाता, सप्तमातृका, वनदेवी, प्रकृतिदेवी आदि की अवधारणा प्रारंभिक मातृ सत्तात्मक व्यवस्था की ही देन है। इस सामाजिक व्यवस्था ने स्त्री–पुरूष दोनों के लिए जीवन पहले से अधिक सरल बना दिया। पुरुष शिकार के लिए नए–नए हथियार गढने में रुचि लेने लगा जबकि स्त्रियाँ गृह प्रबंधन को सुचारू रूप से चलाने में व्यस्त हो गईं। परंतु यह सुखद स्थिति लम्बे समय तक नहीं टिक सकी। सभ्य होते–होते मनुष्य में महत्वाकांक्षा के साथ–साथ प्रतिस्पर्धा की भावना भी बढ़ने लगी। इस नियम के पश्चात स्त्रियों की दुनिया चारदीवारी में कैद होती चली गई। सामाजिक गतिविधियों में उनकी भूमिका नगण्य हो गई। उपार्जन के साधनों पर पूरी

04/22

International Journal of Arts & Education Research

उच्च प्राथमिक स्तर पर (एएलएम) के कार्यान्वयन में शिक्षकों के प्रति दृष्टिकोण

डॉ. बी.आर. बरोदे
शोध निर्देषक

समता वर्मा
शोधार्थी

सार

वर्तमान अध्ययन जबलपुर जिले के उच्च प्राथमिक स्तर के स्कूलों में एएलएम के कार्यान्वयन में शिक्षकों के प्रति दृष्टिकोण और समस्याओं की जांच करता है। सांख्यिकीय विश्लेषण के परिणाम एएलएम के कार्यान्वयन के प्रति दृष्टिकोण और एएलएम के कार्यान्वयन में शिक्षकों के सामने आने वाली समस्याओं के बीच एक महत्वपूर्ण नकारात्मक सहसंबंध दिखाते हैं। उच्च प्राथमिक स्तर पर सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों में पुरुष और महिला शिक्षकों के बीच दृष्टिकोण और एएलएम के कार्यान्वयन में आने वाली समस्याओं के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं देखा गया है। अतः यह कहा जा सकता है कि अवधारणाओं की समझ बनाने के लिए ALM एक आवश्यक अधिगम प्रक्रिया है। कि प्रचलित कक्षा गत प्रक्रिया को अधिक सहज एवं बाल केन्द्रित बनाने, प्रत्येक बच्चे को अपनी स्वाभाविक गति से सीखने एवं व्यक्त करने के अवसर देने तथा शाला में बच्चे के प्रत्येक दिन को उपयोगी, मनोरंजक एवं सार्थक बनाने हेतु ALM आवश्यक है।

मुख्य शब्द : एएलएम , अधिगम, •

प्रस्तावना

जिस तरह से इतिहास के माध्यम से ज्ञान को व्यवस्थित किया गया है, उसी तरह से लेनदेन के विषयों के आसपास स्कूल की संरचना की जाती है। औद्योगिक क्रांति ने कई चीजों को संभव बनाया। इसने बड़े पैमाने पर स्कूली शिक्षा भी लाई जो उस समय के प्रमुख दृष्टिकोण के आसपास बनाई गई थी कि छात्र खाली बर्तन की तरह होते हैं और ज्ञान को उनमें डालना पड़ता है। प्रारंभिक शिक्षा स्कूली शिक्षा की सीढ़ी का पहला चरण है, जो बाकी स्कूली शिक्षा और सभी उच्च शिक्षा की नींव रखता है। इसलिए हमारी शिक्षा प्रणाली को छात्रों में आवश्यक कौशल और ज्ञान का आधार बनाना चाहिए जो इन आवश्यक कौशलों का उपयोग करके संज्ञानात्मक विकास और विकास को सक्षम बनाए। ये बुनियादी कौशल हैं पढ़ना, लिखना, सुनना, संचार, गणितीय कौशल और अवलोकन कौशल (NCF–2005)। शिक्षा में उच्च गुणवत्ता का एक प्रमुख पहलू विभिन्न शैक्षणिक कौशल और ज्ञान में उच्च शिक्षण परिणामों की प्राप्ति है और जब ऐसी शिक्षा विकलांग छात्रों को उनकी सामाजिक–आर्थिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के बावजूद विकलांग छात्रों के रूप में शामिल करने में सक्षम है। समझ के लिए शिक्षण शैक्षिक अभ्यास में एक एजेंडा है जो 1980 के

IJAER/March-April-2022/Volume-11/Issue-2 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के अध्यापकों के व्यावसायिक दबाब का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन

डॉ. बी. आर. बरोदे
निर्देशक

श्रीमति सुधा पासी
शोधार्थी

शोध सार

प्रस्तुत शोध का मुख्य उददेश्य उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के महिला एवं पुरूष अध्यापकों के व्यावसायिक दवाब का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है । अध्ययन हेतु जबलपुर के शहर के उच्च माध्यमिक स्तर के अशासकीय विद्यालयों के पुरूष एवं महिला अध्यापको का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया हैं। आंकडो के संकलन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। अनुसंधान उपकरण के रूप में व्यावसायिक दवाब मापनी – डॉ.प्रतिभा शर्मा एवं मानसिक स्वास्थ्य मापनी – डॉ. श्रीमति कमलेश शर्मा मापनी का प्रयोग किया गया हैं। सांख्यिकीय गणना के रूप में मध्यमान, मानक विचलन, टी परीक्षण द्वारा विश्लेषण किया गया एवं निष्कर्ष के रूप यह पाया गया कि महिला एवं पुरूष अध्यापकों का व्यावसायिक दबाब का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पडता है।

प्रस्तावना :–

इतिहास के पन्ने पलटने पर हमें ज्ञात होता है कि शिक्षण एक आदर्श व्यवसाय के रूप में रहा है। वह न केवल एक व्यवसाय है, अपितु यह सभी व्यवसायो की जननी है। अध्यापक वह धुरी है। जिस पर शैक्षिक पध्दति कार्यरत है। इसलिए भारतीय समाज में सर्वोच्च व श्रेष्ठतम स्थान शिक्षक को दिया गया है। उसे राष्ट्र का निमार्ता, उन्नायक एंव मानवता का कर्ता, प्रथ प्रदर्शक भी कहा गया है। क्योकि जो एक छात्र के मानस पटल पर लगे हुए ताले को खोलता ही नहीं हैं वरन उसे एक नई दिशा प्रदान भी करता है।

शिक्षा के सभी घटको में अध्यापक ही अधिक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मानी जाती हैं। वह बालक को ऐसी शिक्षा, ऐसी दृष्टि व ऐसी सकारात्मक सोच प्रदान करता हैं जो आगे चलकर एक अच्छा नागरिक, शिक्षक, डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक और वकील बनकर समाज में अपनी भूमिका का निर्वाहन करने योग्य बनाता हैं। व्यवसाय के प्रति पूर्ण समर्पण की भावना एवं सम्पूर्ण उर्जा को व्यवसाय में समर्पित कर दने की तत्परता ही व्यावसायिक प्रतिबध्दता कहलाती है। एक प्रतिबध्द शिक्षक अवश्य ही जीविकागत नैतिकता और कर्तव्य का पालन करता है, चाहे उसे सामाजिक प्रतिफल मिले या न मिले। इसलिये शिक्षण कार्य को सभी व्यवसायो में श्रेष्ठ माना जाता हैं।

शिक्षण व्यवसाय एक ऐसा व्यवसाय हैं जिसमें नैतिकता ,ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा, सहानुभूति, दया, सामाजिकता, कमर्ठता, मानवीयता आदि गुणो की आवश्यकता होती हैं। प्रत्येक व्यवसाय की नींव शिक्षण पर आधारित हैं। सभी व्यवसायो का आधार शिक्षण हैं। अध्यापन एक महत्वपूर्ण कार्य। शिक्षक ज्ञान का सागर हैं जो विद्यार्थियो के विभिन्न पहलुंओ को तराशता हैं शिक्षा व्यक्ति को आवश्यक ज्ञान और कौशल प्रदान करती हैं, निर्माणकारी नागरिकता हेतु तैयार करती है और इस प्रकार देश के वैज्ञानिक और आर्थिक आधारो को शक्ति प्रदान करती है। सभ्य और विकसित समाज और समुदाय के निमार्ण में एक शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षक को अपने जीवन में अनेक कठिनाईयो का निवार्हन

Copyright@ijaer.org

Peer Reviewed Journal for M.Phil., Ph.D. & Appointment of Teacher in Universities & College

ISSN : 2454-4655 VOLUME - 9 No. : 8, Sep. - 2023

International Journal of Social Science & Management Studies

Peer Reviewed & Refereed Journal

Indexing & Impact Factor 5.2

Indian Tech

GLOBAL CERTIFICATION SERVICES

International ISRS Scientific Research Solution

International Journal of Social Science & Management Studies

उच्चतर–माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति पर कोरोना के प्रभाव का अध्ययन

श्रीमती ज्योति शुक्ला[1], डॉ. (श्रीमती) अनिता महर्जि[2]

कोविड–19 की चुनौतियाँ और शिक्षा प्रक्रिया के परिवर्तित स्वरुप में भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व 'कोविड–19' महामारी के चलते एक अभूतपूर्व कठिनाई का सामना कर रहा है। वायरस के प्रसार को रोकने के लिए, दक्षिण एशियाई देशों ने कड़े लॉकडाउन लगाए है, जिसके परिणामस्वरूप इस क्षेत्र के लाखों लोगों का जीवन और आजीविका प्रभावित हुई है, जहाँ दुनिया के एक तिहाई गरीब रहते हैं। इस पृष्ठभूमि के खिलाफ पर्यटन, अनौपचारिक क्षेत्र, कृषि और ग्रामीण आजीविका सहित प्रमुख सामाजिक और आर्थिक स्तर पर कोविड–19 के मौजूदा और संभावित प्रभावों, जोखिमों और चुनौतियों की जांच करता है। विश्लेषण से पता चला है कि कोविड–19 से आर्थिक विकास को प्रभावित करने, राजकोषीय घाटे और मौद्रिक बोझ में वृद्धि, प्रवासन और प्रेषण में कमी, यात्रा और पर्यटन से आय कम होने की संभावना है और परिणामस्वरूप सूक्ष्म लघु और मध्यम उद्योग और अनौपचारिक व्यवसाय घटते जा रहे हैं। इससे गरीबी और बढ़ने की संभावना है और बेरोजगारी और भूख और खाद्य असुरक्षा के जोखिम बढ़ेंगे। यदि ठीक से संबोधित नही किया गया तो यह मौजूदा असमानताओं को मजबूत कर सकता है कोविड–19 ने क्षेत्र की बड़ी आबादी और गरीबी की उच्च दर, दयनीय स्वास्थ्य, खराब सामाजिक–आर्थिक स्थितियों, अपर्याप्त सामाजिक सुरक्षा प्रणालियों को प्रभावित किया है। प्रस्तुत शोध कार्य का उद्देश्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति पर कोरोना के प्रभाव का अध्ययन करना है। न्यादर्श हेतु जबलपुर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों से 400 विद्यार्थियों का चयन किया गया। । इन विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति के मापन हेतु मानकीकृत सामाजिक–आर्थिक स्थिति मापनी एवं कोरोना की प्रभावशीता मापने हेतु स्वनिर्मित प्रशासन किया गया तथा प्रदत्तों के विश्लेषण के उपरांत पाया कि कोरोना का उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

कोविड–19 के दौरान प्राथमिक शिक्षा पूरी तरह ध्वस्त हो चुकी है, न विद्यालय, न कक्षा न पाठ्यपुस्तक न परीक्षा। शिक्षा के नाम पर नाममात्र के अनेक असफल प्रयास अपनाए गए। कोरोना महामारी ने सारी दुनिया भर में एक व्यवधान और अभूतपूर्व नुकसान को पैदा किया है। कोई भी देश विकास से विकसित तक इसकी मार से नही बच पाया है। दिसंबर 2019 में चीन के बुहान शहर से निकाले कोरोना वायरस के एक नए तनाव के कारण हुए कोविड–19 को विश्व संगठन द्वारा महामारी घोषित किया गया। इसकी संक्रामक प्रकृति के कारण बड़ी संख्या में आर्थिक गतिविधियों को रोक दिया है।

[1] शोधार्थी, महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय (म.प्र.)
[2] विभागाध्यक्ष, महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय, जबलपुर

Peer Reviewed Journal for M.Phil., Ph.D. & Appointment of Teacher in Universities & College

ISSN : 2394-3580 VOLUME - 10 No. : 9, July - 2023

Swadeshi Research Foundation

A MONTHLY JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

Indian Tech

GLOBAL CERTIFICATION SERVICES

Research Journal SRF Book Publication

International SRS Scientific Research Solution

Peer Reviewed & Refereed Journal

Indexing & Impact Factor 5.2

Published by :

Swadeshi Research Foundation & Publication

Seva Path, 320 Sanjeevani Nagar,
Veer Sawarkar Ward, Garha, Jabalpur (M.P.) - 482003

Swadeshi Research Foundation A Monthly Journal of Multidisciplinary Research
International Peer Reviewed, Refereed, Indexing & Impact Factor - 5.2, Ex- UGC S.N. 4990
ISSN : 2394-3580, Vol. - 10, No. - 9, July - 2023

2023

उच्चतर–माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों के समायोजन पर कोरोना के प्रभाव का अध्ययन

श्रीमती ज्योति शुक्ला
शोधार्थी, महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय (म.प्र.)
डॉ. (श्रीमती) अनिता महर्जि
विभागाध्यक्ष, महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय, जबलपुर

समायोजन एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक परिवर्त्य है, क्योंकि प्रत्येक जीवित प्राणी के सामने कुछ न कुछ परेशानियों और समस्याएँ होती हैं। एक व्यक्ति कितना प्रभावशाली है, यह उसकी समस्याओं की संख्या से ज्ञात नहीं होता है बल्कि उसकी प्रभावशीलता इस बात से स्पष्ट होती है कि वह इन समस्याओं को तथा जीवन की चुनौतियों को किस प्रकार स्वीकार करता है। समायोजन एक गतिशील प्रक्रिया है, न कि स्थिर यदि व्यक्ति के समायोजन को देखा जाए तो केवल व्यक्ति में ही परिवर्तन नहीं होते हैं परिवर्तन अक्सर पर्यावरण में भी होते रहते हैं। कोविड–19 की चुनौतियाँ और शिक्षा प्रक्रिया के परिवर्तित स्वरुप में भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व 'कोविड–19' महामारी के चलते एक अभूतपूर्व कठिनाई का सामना कर रहा है। प्रस्तुत शोध कार्य का उद्देश्य विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकें के समायोजन पर कोरोना के प्रभाव का अध्ययन करना था। न्यादर्श हेतु जबलपुर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों से 200 शिक्षक एवं शिक्षिकाओं का चयन किया गया। इन विद्यार्थियों पर समायोजन मापनी एवं कोरोना की प्रभावशीता मापने हेतु स्वनिर्मित प्रशासन किया गया तथा प्रदत्तों के विश्लेषण के उपरांत निष्कर्ष स्वरूप पाया कि शिक्षकों के समायोजन पर कोरोना का प्रभाव पड़ता है। कोरोना से अधिक प्रभावित शहरी एवं ग्रामीण शिक्षक शिक्षिकाओं एवं कोरोना से कम प्रभावित ग्रामीण शिक्षक–शिक्षिकाओं के समायोजन में सार्थक लिंग भिन्नता नहीं है। जबकि शहरी क्षेत्र के कोरोना से कम प्रभावित शिक्षिकाओं का समायोजन आक्षिकों की तुलना में अच्छा है।

मानव एक जिज्ञासु प्राणी है। अपनी जिज्ञासा शांत करने हेतु नित नए प्रयोग और प्रयास करता रहता है। आदिकाल से जैसे ही उसने सामाजिक जीवन आरंभ किया धीरे–धीरे प्रकृति से दूरी होने लगी। वह प्राकृतिक नियमों को यदा–कदा अनदेखी करने लगा। परिणाम स्वरुप प्रकृति भी कभी–कभी मानव को अपने होने का अस्तित्व किसी न किसी रुप में दिखाती है। अब मानव प्राकृतिक संसाधनों का लगातार दोहन करने लगा, प्रकृति के नियमों को जान–बूझकर तोड़ने लगा, ऐसी स्थिति में कभी–कभी अपने आपको सर्वोच्च शक्तिशाली मानने से भी गौरवान्वित होने लगा है। अब मानव की प्रवृत्ति प्रकृति की प्रवृत्ति से भिन्न होने लगी। प्रकृति जहाँ प्रकृति प्रेमियों पर उपहार स्वरुप अपना सर्वस्व मनुष्य को देती है, और हम इस प्राकृतिक उपहार का उपहास उड़ाने लगते हैं, तो प्रकृति भी मानव को सही रास्ते पर लाने के लिए कभी–कभी अपना रौद्ररुप भी दिखाती है। तब मानव को अपनी स्थिति का आभास होता है।

शिक्षा मानव विकास का साधन है, यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिससे बालक का सर्वांगीण विकास संभव है। यह आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। विद्यालय शिक्षा प्राप्त करने का एक औपचारिक साधन है, किन्तु शिक्षा कहीं से और कभी भी प्राप्त की जा सकती है। शिक्षा प्राप्त करना हमारा मौलिक अधिकार है। व्यक्तिगत विकास और आधुनिक लोकतात्रिक समाज के लिए यह अति आवश्यक है।

शिक्षा वह प्रकाश है, जिसके द्वारा बालक की समस्त शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है। इससे वह समाज का एक उत्तरदायी घटक एवं राष्ट्र का प्रखर चरित्र सम्पन्न नागरिक बनकर समाज की सर्वांगीण उन्नति में अपनी शक्ति का उत्तरोत्तर प्रयोग करने की भावना से ओत–प्रोत होकर संस्कृति एवं सभ्यता पुर्नस्थापित करने के लिए प्रेरित होता जाता है। मानव विकास के महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक महत्वपूर्ण पहलू है, समायोजन। बालक के विकास व समायोजन मे विभिन्न कारकों में से शिक्षण का माध्यम प्रेरणा एवं विद्यालय परिवेश तीनों कारकों का प्रमुख योगदान रहता है ये कारक प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रुप से अपना–अपना प्रभाव बालक के विकास पर डालते रहते हैं।

व्यक्ति अपने विकास में ऐसी परिस्थितियों का सामना करता है, जो उसकी इच्छाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति में बाधक होते हैं उदाहरणार्थ–एक छात्र शिक्षा समाप्त करने पर वायु सेना

Swadeshi Research Foundation A Monthly Journal of Multidisciplinary Research
International Peer Reviewed, Refereed, Indexing & Impact Factor - 5.2, Ex- UGC S.N. 4990
ISSN : 2394-3580, Vol. - 10, No. - 7, May - 2023

2023

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के अध्यापकों के शिक्षण के प्रति प्रतिबद्धता का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

सुधा पारी, शोधार्थी
डॉ. जी.आर. बरोदे, निर्देशक
सरदार पटेल विश्वविद्यालय, बालाघाट

शोध सार :– प्रस्तुत शोध में उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के अध्यापकों के शिक्षण के प्रति प्रतिबद्धता का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया हैं। शोध अध्ययन हेतु जबलपुर शहर के ग्रामीण एवं शहरी उच्चतर माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के पुरूष एवं महिला शिक्षकों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया। आंकड़ों के संकलन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। अनुसंधान उपकरण के रूप में शिक्षण के प्रति व्यावसायिक प्रतिबद्धता मापनी डॉ. रविन्दर कौर एवं डॉ. सबरजीत कौर, संजीत कौर एवं मानसिक स्वास्थ्य मापनी, डॉ. श्रीमति कमलेश शर्मा की मापनी का प्रयोग किया गया हैं। प्राप्त जानकारी को सांख्यिकीय विधि द्वारा सत्यापन करने के पश्चात् यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के महिला एवं पुरूष अध्यापकों ने शिक्षण के प्रति प्रतिबद्धता का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता हैं।

प्रस्तावना :– शिक्षा मानव जीवन का आधार है, मानव का विकास एवं उन्नयन शिक्षा पर निर्भर हैं। शिक्षा व्यक्ति को इस योग्य बनाती है जिससें वह परिस्थितियों के अनुरूप अपने जीवन व समाज के लिये उचित कार्यो को उचित समय पर कर सके। शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षकों का अत्याधिक महत्व हैं वह आज की शिक्षा प्राणली का महत्वपूर्ण अवयव एवं केन्द्र बिंदु है, जिसके कंधों पर देश को संवारने का कार्यभार हैं। वह शिक्षा का कार्यान्वयनकर्त्ता, भविष्य की पीढ़ियों को आकार देने वाला एक अन्वेशक तथा समन्वयक होता हैं। शिक्षक विद्यार्थी के गुणों को निखारकर उसे दीपक की लौ की तरह प्रकाशित भी करता हैं। विद्यालयों में अध्यापक का महत्व न केवल शिक्षा के क्षेत्र में बल्कि राष्ट्र निर्माण के क्षेत्र में भी हैं। इस दृष्टि से वह राष्ट्र का निर्माता कहा जाता हैं। हर एक देश का भविष्य शिक्षा के उच्च स्तर के विचार शिक्षक पर ही निर्भर करता हैं। शिक्षक विद्यालय संगठन का हद्रय माना जाता हैं। उनका कार्य न केवल बालक का मानसिक विकास करना है, वरन् उसके शारीरिक, नैतिक सामाजिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास में भी योगदान करना हैं, शिक्षक की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए शिक्षाशास्त्री ने कहा हैं –" शिक्षक राष्ट्र की संस्कृति बनाता है। शिक्षक को देश के भावी कर्णधार व समाज का मार्गदर्शक माना गया है, वह राष्ट्र का शिरोमणि निर्माता एवं कर्णधार हैं।" शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक के व्यवसाय का ऐसा ही महत्व हैं जैसे कि ऑपरेशन करने के लिये किसी डॉक्टर अर्थात् सर्जन का महत्व होता है। शिक्षक सिर्फ समाज ही नहीं बल्कि राष्ट्र की भी धुरी हैं। समाज व राष्ट्र सुधार और निर्माण के कार्य में उसकी महत्ती भूमिका होती हैं, इसलिए किसी भी शिक्षा प्रणाली या शिक्षा योजना की सफलता या असफलता शिक्षा के क्षेत्र के सूत्रधार शिक्षकों के रवैये और उनके व्यवहार पर निर्भर करता हैं। अध्यापक का कर्तव्य हैं कि वह अपनी व्यावसायिक कुशलता बढ़ाने का सदैव प्रयास करे। सदैव से ही शिक्षक का पद समाज एवं शैक्षिक कार्यकमों में अत्यंत महत्वपूर्ण रहा हैं। शिक्षा का पाठ्यकम, निर्देशन, कार्यकम छात्र आदि कितने ही अच्छे क्यों न हो परंतु जब तक उसमें एंक अच्छे शिक्षक द्वारा प्रण नहीं फूके जायेगें। तब तक शैक्षिक पद्धति सुचारू रूप से संचालित नहीं हो सकती हैं।

एक अध्यापक को अपने व्यवसाय के प्रति निष्ठावान एवं कर्तव्यनिष्ठ होता हैं। अपने व्यवसाय में निपुण होने के लिये उसे मनोविज्ञान का ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक हैं। क्योंकि शिक्षक मनोविज्ञान की सहायता से वह अपने छात्रों के विषय का ज्ञान प्राप्त कर सकता है।

अध्यापक अपने व्यवसाय में लंबी अवधि तक अध्यापन करने की प्रकिया से गुजरता हैं। तब जाकर अध्यापक ज्ञान, प्रशिक्षण और अनुभव अर्जित करता है। वह समाज की नयी पीढ़ी को अज्ञान के अंधकार से बाहर लाकर समाज के आदर्शो और मूल्यों के अनुरूप आकृति देता है। शिक्षण एक सम्मानजनक व्यवसाय हैं अन्य व्यवसायों की तरह शिक्षण कार्य भी एक व्यवसाय माने जाने लगा है। इसमें विशेष प्रकार के ज्ञान व दक्षता की आवश्यकता होती हैं। इसलिए शिक्षक को नियमित रूप से अपने ज्ञान में वृद्धि तथा व्यावसायिक तथा दक्षता में वृद्धि करते रहना आवश्यक हैं। शिक्षक

ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में महिलाओ की सामाजिक सरोकार और महिला सशक्तिकरण का अध्ययन

2020

सचिन कुमार पैन्जवे
डॉ. मंजू शर्मा
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)

सारांश –

आजकल महिला सशक्तिकरण एक बहुआयामी और बहु–स्तरीय अवधारणा है। महिला सशक्तिकरण का अध्ययन भी संदर्भ–विशिष्ट है। हमने जबलपुर जिले की महिलाओं के लिए घरेलू स्तर पर और सामुदायिक स्तर पर सशक्तिकरण को प्राथमिकता दी है। इसके लिए मूल रूप से प्रत्येक स्तर के लिए महिला राशक्तिकरण के पांच आयामों पर विचार किया गया। ये आर्थिक आयाम, पारिवारिक आयाम, राजनीतिक आयाम, एक सामाजिक आयाम और कानूनी आयाम हैं। इस शोध में, सामाजिक सरोकारों और महिलाओं के महिला सशक्तिकरण पर ध्यान केंद्रित किया गया है, जो ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों (जबलपुर जिले के संदर्भ में) में उनके परिवार पर इसके प्रभाव को दर्शाता है। उन महिलाओं पर ध्यान केंद्रित करें जो भारत के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में समाज की चिंता के साथ और जबलपुर के मुख्य संदर्भ के साथ अपनी कमाई के लिए काम करती हैं। यह अनुभवजन्य अध्ययन जबलपुर जिले की 500 महिलाओं से एकत्रित प्राथमिक आंकड़ों के एक सेट पर आधारित है।

प्रस्तावना –

महिला राशक्तिकरण से तात्पर्य महिलाओं के व्यक्तियों और समुदायों की आध्यात्मिक, राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षणिक, लैंगिक या आर्थिक ताकत में वृद्धि करना है। भारत में महिला सशक्तिकरण कई अलग–अलग चर पर निर्भर है, जिसमें भौगोलिक स्थिति (शहरी/ग्रामीण) शैक्षिक स्थिति सामाजिक स्थिति (जाति और वर्ग) और उम्र शामिल है। स्वास्थ्य, शिक्षा, आर्थिक अवसर, लिंग आधारित हिंसा और राजनीतिक भागीदारी सहित कई क्षेत्रों में राष्ट्रीय, राज्य और स्थानीय (पंचायत) स्तरों पर महिला सशक्तिकरण की नीतियां मौजूद है। हालांकि, सामुदायिक स्तर पर नीतिगत प्रगति और वास्तविक अभ्यास के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर है।

महिला सशक्तिकरण, साक्ष्य आधारित सामाजिक और आर्थिक राशक्तिकरण मंच है जो महिलाओं को पैसे बचाने, वित्तीय साक्षरता विकसित करने और आय–सृजन की गतिविधियों में निवेश करने में सक्षम बनाता है। वित्तीय सेवाओं में महिलाओं की पहुंच बढ़ाने के अलावा, महिला राशक्त समूह कौशल सीखने और क्षमता निर्माण, आत्मसम्मान,